SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन

लक्ष्मी वर्मा, शोधार्थी, शिक्षा विभाग
जगद्गुरु शंकराचार्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
अंजना, पी–एचडी., शोध निर्देशक, प्राचार्य
प्रिज्म कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
छाया सोनपिपरे, पी–एचडी., सह शोध निदेशक, शिक्षा विभाग
कल्याण स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय सेक्टर ७, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
लक्ष्मी वर्मा, शोधार्थी
अंजना, पी–एचडी., **छाया सोनपिपरे,** पी–एचडी.
E-mail : vlaxmi322@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/08/2025
Revised on : 07/10/2025
Accepted on : 16/10/2025
Overall Similarity : 05% on 08/10/2025

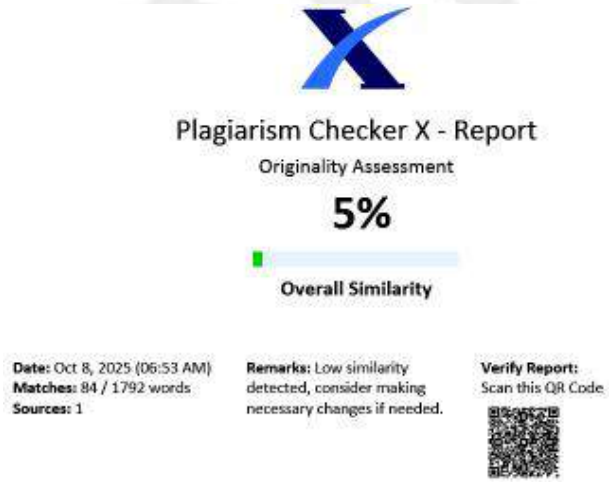

शोध सार

बालक का जैसे–जैसे विकास होता है, वैसे–वैसे शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक व्यवहार का भी विकास होता है। सर्वप्रथम बालक परिवार एवं समाज में अपना स्थान बनाता है। समाज मे स्थान बनाने के लिए परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विकास बालक में तभी होगा जब उसे शिक्षा के उचित अवसर के साथ–साथ उचित वातावरण प्रदान किया जाएगा। विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें बहुत सी बातों का समावेश होता है, विकास के क्रम में बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक,सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है, विकास में यह सभी पक्ष परस्पर सह संबंधित है। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शारीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध के लिए न्यादर्श के रूप में 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए डॉ. नलिनी राव द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण ''सामाजिक परिपक्वता मापनी'' का प्रयोग किया गया आंकड़ों के विश्लेषण हेतु शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण करके टी–परीक्षण का उपयोग किया गया और निष्कर्ष में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर पाया गया। विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता की कमियों को दूर कर सामाजिक परिपक्वता को उच्च बनाने का

प्रयत्न विद्यालय समाज एवं पारिवारिक स्तर पर किया जाना आवश्यक है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, समाज, बालक, विद्यार्थी, बौद्धिक.

प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, मनुष्य के जीवन में वातावरण का विशेष प्रभाव पड़ता है। मनोविज्ञान के अनुसार मानव के विकास में जितना अनुवांशिकता का योगदान होता है, उतना ही योगदान विकास में वातावरण का होता है,क्योंकि मनुष्य जब जन्म लेता है और वातावरण के संपर्क में आता है, तो वह विकास के साथ–साथ अपने आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखता है। मनुष्य का जन्म से ना कोई जाति होती है, और ना ही उसका कोई धर्म होता है। जाति एवं धर्म उसे परिवार और समाज द्वारा प्रदान किए जाते है। समाज तथा परिवेश से वह अनेक आदतों को सीखता है, और उनकी आदतें और विचार परिवर्तित होते रहती हैं। शैशवावस्था के बाद बालक बाल्यावस्था में प्रवेश करता है, तो घर से विद्यालय की ओर अग्रसर होकर समाज के संपर्क में आने से समाज के द्वारा बनाए गए नियमों तथा विचारों का सामना करता है। बाल्यावस्था के बाद एक सबसे कठिन अवस्था का आगमन होता है, और वह अवस्था होती है किशोरावस्था की यह अवस्था संवेदनशील होती है और इस अवस्था में बालक को जैसे समाज मिलता है वह उसी की तरफ मुड़ जाता है। बालक समाज के प्रति ज्यादा संवेदनशील होता है। इस अवस्था मे बालक एवं बालिकाओं में उमंग एवं स्फूर्ति का आगमन होता है जिसे किशोरावस्था कहते हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शारीरिक, बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता प्राप्त होती हैं। सामाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृति के साथ–साथ प्रस्तुत करती है जो कुछ चीजों को स्वीकृति और कुछ चीजों को अस्वीकृति की ओर ले जाती है। सामाजिक परिपक्वता का तात्पर्य लाभ या सामाजिक अपेक्षानुसार बर्ताव करने की योग्यता से हैं। इसको इस प्रकार से परिभाषित किया गया है कि वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वृहद श्रेणी के साथ जन्मा व्यक्ति वास्तविक बर्ताव का मार्ग दिखलाता है जो की बहुत ही सकरी श्रेणी के अंतर्गत सीमित है, वह श्रेणी है जो व्यक्ति के समुदाय के आदर्शों के अनुसार इसके लिए प्रथागत और स्वीकार करने योग्य हैं। हारलांक के अनुसार ''सामाजिक उन्नति का तात्पर्य सामाजिक संबंधों में परिपक्वता को प्राप्त करना है, जिसका अर्थ समूह के आदर्शों नैतिकता एवं परंपराओं के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया को सीखना है, और एकता के विचार अंतःसंचार और सहयोग को मन में रखना है, यह बर्ताव के नये तरीकों की उन्नति, रुचि में बदलाव नए मित्रों के चुनाव को शामिल करता है सामाजिक व्यक्ति वह जो न केवल लोगों के साथ रहता है बल्कि उनके साथ कार्य करना चाहता है।'' सामाजिक परिपक्वता का अर्थ है समाज के मूल्यों, नियमों अभिवृत्तियों, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक भूमिका में परिपक्वता प्राप्त करना। उपरोक्त गुण किसी किशोर में विकसित हुए हैं, तो वह किशोर समाज की दृष्टि में पूर्ण रूपेण सामाजिक रूप से परिपूर्ण माना जाएगा। सामाजिक परिपक्वता समाज के मूल्यों, नियमों अभिव्यक्तियों, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक भूमिका में परिपक्वता प्राप्त करना है। सामाजिक परिपक्वता के कारण किशोर सामाजिक मूल्यों, नियमों, और भूमिका आदि में निष्ठा ही नहीं रखता बल्कि वह इन्हीं के आधार पर समूह में व्यवहार करता है। ऐसे किशोर सामाजिक गतिविधियों में रुचि लेते हुए संतोष व प्रसन्नता का अनुभव करता है। सामाजिक परिपक्वता के विकास में परिवार का वातावरण, विद्यालय का वातावरण, मित्र मंडली, पास पड़ोस, संचार के साधन, व्यक्तित्व, धार्मिक संस्थान, खेल, मनोरंजन के साधन आदि का विशेष योगदान होता है।

अध्ययन का औचित्य

व्यक्ति समाज में रहते हुए समाज के मूल्यों, मानकों व नियमों को भलीभांति समझते हुए एक संतुलित व्यवहार करता है, तो उसका यह गुण सामाजिक परिपक्वता है। समाज मनोविज्ञान के अनुसार सामाजिक परिपक्वता व्यक्ति

का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुनिया से परिचय कराने, उसे समाज तथा उनके विभिन्न समूह में सहयोगी सदस्य बनाने तथा उसे समाज के मानकों एवं मूल्यों को स्वीकार कर उसके अनुरूप व्यवहार के लिए प्रेरित करने की स्थिति है। बालक की सामाजिक परिपक्वता में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, बालक को परिवार, समाज, विद्यालय से जिस प्रकार की शिक्षा मिलेगी बालक वैसा ही बनेगा उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करने हेतु प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन।

शोध के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आवास की विभिन्नता के आधार पर सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

$\mathbf{H_{01}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

$\mathbf{H_{02}}$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आवास की विभिन्नता के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शोध का सीमांकन

1. प्रस्तुत शोध कार्य में दुर्ग जिले के नवोदय विद्यालय, सरकारी एवं निजी विद्यालयों को लिया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य में नवोदय विद्यालय,सरकारी एवं निजी विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता के अध्ययन तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा शोध की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के लिए छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के नवोदय विद्यालय, सरकारी एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों को लिया गया है, अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी प्रस्तुत शोध की जनसंख्या है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के कुल 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया जिसमें 300 विद्यार्थी आवासीय विद्यालय के (नवोदय विद्यालय के 150 विद्यार्थी जिसमें 75 छात्र एवं 75 छात्राएं) तथा निजी विद्यालय के 150 विद्यार्थी (75 छात्र 75 छात्राएं) लिए गए। 300 गैर आवासीय विद्यालय के (सरकारी विद्यालय के 150 विद्यार्थी 75 छात्र 75 छात्राएं) तथा निजी विद्यालय के 150 विद्यार्थी 75 छात्र 75 छात्राएं) को लिया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करने हेतु डॉ. नलिनी राव द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण ''सामाजिक परिपक्वता मापनी'' (SMS) का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका क्रमांक 1

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक (SD)	टी–मान (t)	सार्थक अंतर 0.05=0.01	निष्कर्ष
छात्र	300	59.90	9.75	3.38	0.05=1.96	अस्वीकृत
छात्राए	300	57.50	7.37		0.01=2.58	अस्वीकृत

(df = N1+ N2-2) = 300 + 300 – 2 = 598

तालिका क्रमांक 1 उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता से संबंधित आंकड़े दिए गए हैं तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता के अंश 598 पर टी– मान 3.38 प्राप्त हुआ, जो 0.05 एम 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान से अधिक है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की विद्यालय विभिन्नता के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा

तालिका क्रमांक 2

समूह (Group)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक (SD)	टी–मान (t)	सार्थक अंतर 0.05=0.01	निष्कर्ष
आवासीय विद्यालय	300	61.70	7.47	8.96	0.05=1.96	अस्वीकृत
गैर आवासीय विद्यालय	300	55.70	8.85		0.01=2.58	अस्वीकृत

(df = N1+ N2-2) = 300 + 300 – 2 = 598

तालिका क्रमांक 2 में माध्यमिक स्तर के आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता से संबंधित आंकड़े दिए गए हैं तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता के अनुसार 598 पर टी–मान 8.96 प्राप्त हुआ, जो 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक टी–मान से अधिक है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत स्वीकृति की जाती है।

निष्कर्ष

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर पाया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आवास की विभिन्नता के आधार पर भी सामाजिक परिपक्वता में सार्थक अंतर पाया गया निष्कर्ष से पता चलता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की परिपक्वता पर लिंग एवं आवास की विभिन्नता का अंतर पाया जाता है अतः विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता की कमियों को दूर कर सामाजिक परिपक्वता को उच्च बनाने का प्रयत्न विद्यालय स्तर पर सामाजिक स्तर पर पारिवारिक स्तर पर किया जाना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. आलम, मोहम्मद महमूद (2016) सोशल एडजेस्टमेंट एंड सोशल मेच्योरिटी एंड प्रेडिकेटर्स आफ एकेडमी एचीवमेंट एमंग एडोलसेन्ट, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनफॉर्मेटिव एंड फ्यूरि स्टिक रिसर्च,* 3(12), 4495–4507।
2. सिंह, धर्मेंद्र कुमार (2018) उच्च शिक्षा स्तर पर प्रतिभाशाली छात्रों के नैतिक निर्णय एवं सामाजिक व्यवहार तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबंध राजा हरपाल सिंह पीजी कॉलेज, सिंगरामऊ, जौनपुर।
3. सिन्हा, बनिता (2014) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि, संवेगात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन, पी–एच.डी. शोध प्रबंध पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़।
4. त्रिपाठी एवं सिंह (2016) रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्यनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पढ़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांसड, एजुकेशन रिसर्च,* 1(5), 48–50।
5. त्रिवेदी, रश्मि (2017) माध्यमिक विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर मूल्य के प्रभाव का अध्ययन, शोधयतन, *ए. आई. एस. ए.सी. टी. यूनिवर्सिटी जर्नल,* 4(8) 770–772।

****